आध्यात्मिक परिवार

- दिल्ली : ए-1, 351-352, विजय विहार, पो. रिठाला, रोहिणी सै.5 के पास, दिल्ली-110 085 (0) 9891370007 (0) 9311161007
- फर्रुखाबाद : 5/26ए, सिकत्तरबाग, जि. फर्रुखाबाद (उ.प्र.)209 625 (0)9335683627 (0)9721622053
- कम्पिला : नेहरु नगर, गंगा रोड, ग्रा.पो. कम्पिला, जि. फर्रुखाबाद (यू.पी.) 207505 (0)9389079293
- लखनऊ : एस./99 चंद्रमा मार्केट, भूतनाथ मेन मार्केट, पो.इंदिरानगर, लखनऊ- 226016 (यू.पी.) (0) 9369439863
- कोलकाता : सी.एल.-249, सैक्टर-2, सॉल्ट लेक सिटी, कोलकाता-700091(पश्चिम बंगाल) (0) 9330417213 (0) 9883654481
- मुंबई : प्लॉट नं.96 बी, 'सरोवर', डिसिल्वा नगर, नालासोपारा (वेस्ट), पो. सोपारा, तहसील- बसई, जिला-थाना-401203 महाराष्ट्र (0)9325947810 (0) 9665696598
- हैदराबाद : 29/3 आर.टी. प्रकाशनगर, पो. बेगमपेट, हैदराबाद- 500016 (आन्ध्रा) (0)9394693379
- बैंगलूर : शिवज्योति निलयम, 138, फर्स्ट मेन, टिन फैक्टरी के पीछे, उदयनगर, पो. दूरवाणीनगर, बैंगलूर-560016 (कर्नाटक) (0)9379934044
- चण्डीगढ़ : हाऊस नं.634, केशोराम कॉम्पलेक्स, सैक्टर नं. 45 सी, पो.-बुड़ैल, जिला-चण्डीगढ़ - 160047 (पंजाब) (0172) 2622829 , (0)9357277591

Visit us at: www.a1spiritual.info
E-mail:- a1spiritual1@gmail.com

आध्यात्मिक विश्व विद्यालय

शिवबाबा की मुरली

ईश्वरीय सेवा और मिलन

ऑडिओ कैसेट नं.

29

अव्यक्त वाणी ता.8.4.92-कम्पिला

<u>नोट 1:-</u> 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय' का नाम बदलकर 'आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्व विद्यालय' नाम डालने के लिए माउण्ट आबू से चलाई गई शिवबाबा की मु.ता.20.3.74,पृ.4 अंत और 19.2.00,पृ.1 में स्पष्ट आदेश इस प्रकार है-''गॉड फादर को स्प्रिचुअल नॉलेजफुल कहा जाता है। तो तुम 'स्प्रिचुअल यूनिवर्सिटी' नाम लिखेंगे। इसमें कोई एतराज़ नहीं उठावेंगे, फिर बोर्ड में भी वह (प्र.ब्र.कु.) अक्षर हटाकर यह स्प्रिचुअल यूनिवर्सिटी लिख देंगे। ट्राय करके देखो, लिखो- 'गॉड फादरली स्प्रिचुअल यूनिवर्सिटी।' इनकी एम-ऑब्जेक्ट यह है। दिन-प्रतिदिन तुम्हारे म्युजियम, चित्रों आदि में भी चेंज होती जावेगी, फिर सब सेंटर्स पर लिखना पड़ेगा- ''गॉड फादरली स्प्रिचुअल यूनिवर्सिटी।''

<u>नोट 2:-</u> भारत और अन्य देशों में आध्यात्मिक परिवार के सदस्यों द्वारा अनेक शहरों में आध्यात्मिक गीता मंदिर एवं अनेक गाँव और कस्बों में सच्ची गीता-पाठशालाएँ चल रही हैं, जहाँ ईश्वरीय ज्ञान तथा राजयोग की शिक्षा दी जाती है, जिनके पते अगले पृष्ठ पर दिए गए अन्तर्राज्यीय आध्यात्मिक परिवारों से प्राप्त किए जा सकते हैं।

<u>त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाचः-</u> ''बेहद का बाप, ज्ञान का सागर, पतित-पावन, सद्गति दाता, गीता का भगवान शिव कैसे प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियों द्वारा फिर से कलियुगी, सम्पूर्ण विकारी, (ब्राह्मणों की) भ्रष्टाचारी, पतित दुनिया को सतयुगी, सम्पूर्ण निर्विकारी, पावन, श्रेष्ठाचारी (दैवी) दुनिया बना रहे हैं-वह खुशखबरी आकर सुनो अथवा समझो।''

(मु.25.10.66 पृ.1 मध्य)

ओमशान्ति

परमपिता परमात्मा शिवबाबा याद हैं

कल वाणी चल रही थी, 8/4/92 की अव्यक्त वाणी, पेज नम्बर 2. तपस्या वर्ष में दृढ़ संकल्प किया या संकल्प किया? टीचर्स से बात कर रहे थे। क्या किया? सिर्फ संकल्प किया या दृढ़ संकल्प किया? सोचा था दृढ़ संकल्प करने का; लेकिन किया क्या? दृढ़ता की निशानी है सफलता। फिर तो इस वर्ष और फोर्स की तपस्या चाहिए ना! जो आने वाले(वर्ष) 92, 93 हैं उसमें और ही दृढ़ता की तपस्या चाहिए या सेवा करनी है? क्या करना है? दोनों नहीं कर सकते हो? सेवा से भी हार खाये हुए हो और तपस्या भी नहीं कर सकते हो क्या? किससे पूछा? टीचर्स से। ऐसा क्यों पूछा? सेवा क्यों नहीं कर सकते? सेवा इसलिए नहीं कर सकते; क्योंकि जितनी भी सेवा करते हैं, एक तरफ सेवा करते जाते हैं, दूसरी तरफ समझते हैं कि जिनकी सेवा करते हैं वे तो दूसरी ओर मोल्ड हो जाते हैं, तो हमारे सेवा करने से क्या फायदा? इतनों की सेवा की, अच्छे-अच्छे हैण्ड्स निकले, वे सब मोल्ड हो गये। ये सिर्फ आधारमूर्त ब्राह्मणों की दुनियाँ की ही बात नहीं है, बीजरूप आत्माओं की दुनियाँ में भी यही समस्या चल रही है। बीजरूप आत्माओं के संगठन में भी जिनकी इतनी लगन से सेवा की और सेवा का रिजल्ट क्या निकला? जिस तरफ मोल्ड करना था उधर तो मोल्ड नहीं हुए।

इसलिए पूछा कि- सेवा भी नहीं कर सकते और तपस्या भी नहीं कर सकते? दोनों नहीं कर सकते हो क्या? दोनों में अटेन्शन कम हो जाता है क्या? कर्मयोगी टाइटिल नहीं है आपका? यानी सेवा करते हुए योगी नहीं बन सकते क्या? योगी हो? सेवा को छोड़कर बैठकर योग कर सकते हो? क्योंकि तपस्या वर्ष में मोस्टली क्या किया ब्राह्मणों ने? सेवा छोड़ दी, बंद कर दी। यानी कर्म करना बंद कर दिया और सिर्फ योग को पकड़ लिया। तो क्या ये प्रवृत्ति हुई? ये तो निवृत्ति हो गई। निवृत्ति मार्ग वालों का निवृत्ति वाला हठयोग हो गया। गृहस्थियों का कर्मयोग तो नहीं हुआ। तो आपका टाइटिल कर्मयोगी का नहीं है क्या? वैसे देखा जाए, सेवा उसको ही कहा जाता है जिसमें स्व और सर्व की सेवा समाई हुई हो। अगर स्व की सेवा नहीं है तो वो सेवा, सेवा नहीं है; क्योंकि दूसरों की सेवा की और अपनी अवस्था खराब हो गई तो जरूर सेवा में कोई खामी है। तो स्व सेवा के साथ विश्व सेवा भी समाई हुई हो। दूसरे की सेवा की और अपनी सेवा के ऊपर अलबेले हो जाएं तो उसको वास्तव में यथार्थ सेवा नहीं कहा जाता। सेवा की परिभाषा ही है- सेवा का मेवा मिलता रहे। मतलब सफलता मिलती रहे। सफलता मिलेगी तो खुशी भी आयेगी। ऐसी सेवा की जिसमें अपनी अवस्था खराब हो गई, खुशी के बजाय दु:ख हो गया तो जरूर उस सेवा में कोई नुक्स है। सेवा अर्थात् मेवा। प्रत्यक्ष फल।

इसको कहते हैं- सेवा करो मेवा खाओ। अगर स्व की तरफ अलबेले बन गये तो वह सेवा मेहनत है, खर्चा है, थकावट है; लेकिन प्रत्यक्ष फल सफलता नहीं है। थकावट क्यों महसूस हुई? आत्मिक स्टेज होती है तो थकावट हो नहीं सकती। देहभान है तो थकावट जरूर होगी और देहभानपूर्वक जो सेवा की जायेगी वह स्वार्थ की सेवा होगी या परमार्थ की सेवा होगी? वह स्वार्थयुक्त सेवा है। स्व+रथ, अपने रथ के लिए सेवा की। ईश्वर के लिए सेवा नहीं की। तो प्रत्यक्ष फल नहीं निकल सकता। सफलता पहले स्व को, साथ में औरों को सफलता की अनुभूति हो। और भी ये प्रूफ दें कि हमको भी आपकी सेवा से लाभ हुआ। तो दोनों साथ-साथ हों। स्व की हो और औरों की नहीं, तो भी यथार्थ सेवा नहीं है और औरों की हो स्व की नहीं हो, तो भी यथार्थ सेवा नहीं है।

सेवा में सेवा और योग दोनों ही साथ-साथ क्यों नहीं रहता? सेवा और योग दोनों साथ-साथ न रहने का कारण क्या? एक को देखते हो तो दूसरा ढीला होता, दूसरे को देखते हो तो पहला ढीला होता। ऐसा क्यों? कारण क्या? सेवा के प्लैन भी बहुत बनाते हो। अच्छे-अच्छे प्लैन बनाते हो; लेकिन प्लेन बुद्धि बन करके प्लैन नहीं बनाते। प्लेन बुद्धि अर्थात् और कोई भी बात सेवा करते बुद्धि को टच नहीं करे। सिवाय निमित्त भाव और निर्माण भाव के। तो निर्माण कैसे बनेंगे वो तो बताया।

निर्माण करने का लक्ष्य होगा तो निर्मान बनेंगे। तो निर्माण करते निर्मान स्थिति की कमी हो जाती है। निर्माण मतलब कन्स्ट्रक्शन। कन्स्ट्रक्शन तो करते; लेकिन मान-मर्तबा आ जाता। तो निर्मान नहीं बन पाते, वो स्थिति कम हो जाती है। तब निर्माण का कार्य जितना सफल करना चाहते हो उतना सफल नहीं होता। मैं आत्मा हूँ तब तो कोई मान-मर्तबा नहीं। और देह का भान आया तो मान-मर्तबा ज़रूर आयेगा। तो उतना सफल नहीं होता। शुभ भावना, शुभ कामना इसका बीज ही है निमित्त भाव, निर्माण भाव। निर्मान नहीं, मान नहीं। हद का मान नहीं। निर्मान। इसलिए सेवा के प्लान बनाने से पहले प्लेन बुद्धि बनाना अति आवश्यक है। नहीं तो प्लेन बुद्धि के बजाए अगर बुद्धि में और अयथार्थ भाव का किचड़ा मिक्स हो जाता है तो जो सेवा का प्लान बनाते हो , उसमें भी रतन जड़ित के साथ-साथ पत्थर भी जड़ जाते हैं। तो रतन और पत्थर मिक्स हो जाते हैं। नौ रतन जोड़ेंगे तो एक पत्थर मिक्स कर देंगे। अगर कोई भी चीज़ बनाओ, उसमें नौ तो रीयल हों और एक आर्टीफीशल हो तो उसकी वैल्यू क्या होगी? उसकी वैल्यू रहेगी? और ही लेने वाले के भी संकल्प चलेंगे कि नौ भी रीयल हैं या मिक्स हैं या नौ में भी गड़बड़ है! इसलिए सेवा के प्लान के साथ-साथ प्लेन बुद्धि का अटेन्शन पहले रखो। अगर प्लेन बुद्धि है और सेवा का प्लान इतना बड़ा भी नहीं है फिर भी प्लेन बुद्धि वाले को

नुकसान नहीं है , बोझ नहीं है। सेवा का फायदा कम है। लेकिन नुकसान तो नहीं है ना ! मिक्स बुद्धि में तो नुकसान हो जाता है। करना भी है और नुकसान भी हो जाता है। तो ऐसे करने से तो न करना अच्छा।

इसलिए यह वर्ष भी तपस्या का करेंगे। कौन सा वर्ष? 1992। क्या विचार है ? सेवा में तो कहते हो कि नीचे आ जाते हैं। सेवा करने से रिजल्ट क्या निकलता? कि अवस्था नीची हो जाती है। इसका मतलब मान-मर्तबा आ जाता है। देहभान आता है। निर्मान स्टेज में नहीं रहते। तो क्या करेंगे? सिर्फ तपस्या करेंगे ? रहे सन्यासी के सन्यासी। जब स्वयं संपन्न बनो तब विश्व परिवर्तन का भी कार्य संपन्न हो। खुद ही संपन्न नहीं बने , मान चाहिए , मर्तबा चाहिए। हमारा कोई मान क्यों नहीं करता ? तो निर्मान जब तक नहीं बने, तब तक विश्व परिवर्तन नहीं हो सकता। सुप्रीम सोल , इतनी बड़ी हस्ती और साधारण तन में आकर पार्ट बजाते हैं , तब तो इतना बड़ा कार्य करते हैं। अगर वह भी पहले से ही मान मर्तबे वाला रूप धारण कर लें, आते ही विश्व का मालिक बन करके कार्य करें, तो सफलता नहीं हो सकती। तो ये नियम है- कन्स्ट्रक्शन करना है , विश्व की सेवा करनी है तो सेवाधारी को नम्रचित्त होना ज़रूरी है। झुकना ज़रूरी है। जैसे किसी वृक्ष में ज्यादा फल लगे हुए होते हैं , तो वृक्ष झुक करके रहता है। तो स्वयं सम्पन्न बनो। तब विश्व सेवा

का कार्य सम्पन्न हो।

(08/04/92 की अव्यक्त वाणी का तीसरा पेज)

आप सबकी सम्पन्नता के कारण विश्व परिवर्तन का कार्य सम्पन्न होने में रुका हुआ है। प्रकृति दासी बन आपकी सेवा के लिए इंतजार कर रही है कि ब्राह्मण आत्माएँ ब्राह्मण सो फरिश्ता बनें और फिर फरिश्ता से देवता बनें। तो हम सेवा दिल व जान, सिक व प्रेम से करें ; क्योंकि सिवाए फरिश्ता के देवता नहीं बन सकते हो। बीच में सूक्ष्मवतनवासी ज़रूर बनना पड़े। डायरेक्ट कोई जाना चाहे कि परमधाम चले जाएं और स्वर्ग में आ जाएं, ऐसा नहीं होना है। वाया सूक्ष्मवतन, धर्मराजपुरी से क्रॉस ज़रूर करना पड़े। तो ब्राह्मण से फरिश्ता जिसका फर्श की दुनियाँ वालों से कोई रिश्ता न हो। ऐसा बनना पड़े। तो फ़रिश्ता का अर्थ ही है जिसका पुरानी दुनियाँ, पुराने संस्कार , पुरानी देह की प्रकृति से कोई आकर्षण का रिश्ता नहीं। तीनों में पास चाहिए। पुरानी दुनियाँ से भी, पुरानी देह से भी और पुराने संस्कारों से भी मुक्त। वैसे भी ड्रामा में पहले मुक्ति का वर्सा है, फिर जीवनमुक्ति का। किससे मुक्ति का वर्सा है? मुक्ति अर्थात् छुटकारा। किससे छुटकारा? पुरानी दुनियाँ से, पुरानी देह और पुराने संस्कारों से भी छुटकारा अर्थात् मुक्त। जैसे दुनियाँ वाले कहते हैं खास करके भारत में मुक्ति का अर्थ

लगाते आये कि जन्म, जरा, मरण। जन्म के दु:ख से, बुढ़ापे के दु:ख से और मृत्यु के दु:ख से छुटकारा। तो उसको कहते हैं- मुक्ति। पहले मुक्ति का वर्सा है, फिर जीवनमुक्ति का। जीवन में रहते इन सब प्रकार के दु:खों से मुक्ति का वर्सा बाद में मिलता है। वाया मुक्तिधाम के बिना आप जीवनमुक्ति में नहीं जा सकते। फरिश्ता अर्थात् मुक्त। पहले मुक्तिधाम, फिर जीवन मुक्तिधाम। और मुक्त फरिश्ता सो जीवनमुक्त देवता बनेगा।

तो कितने परसेन्टेज में फरिश्ते बने हो? कि ब्राह्मण जीवन में ही खुश हो? फरिश्ता बनना अर्थात् अव्यक्त-फरिश्ता स्वरूप ब्रह्माबाप से प्यार हो। किससे प्यार हो ? अव्यक्त ब्रह्मा फरिश्ता स्वरूप से। सिर्फ ब्रह्मा से नहीं; लेकिन अव्यक्त ब्रह्मा बाप से। माँ-बाप दोनों स्वरूप से। जो फरिश्ता बन करके कार्य कर रहे हैं। क्योंकि पहले भी सुनाते रहे कि दो सीट्स फिक्स हैं। दो सीट्स के अलावा और कोई तीसरी सीट अभी फिक्स नहीं है। अभी कुछ वर्षों से, 2/4 वर्षों से तीसरी सीट ऐड कर दी। तो बोला- 2/3 के अलावा और कोई सीट फिक्स नहीं है। तो फरिश्ता बनना अर्थात् अव्यक्त फरिश्ता स्वरूप ब्रह्मा बाप से प्यार। प्यार भी हमारा किससे ? सिर्फ एक से या प्यार भी प्रवृत्ती का? ब्रह्मा बाप से प्यार। जिसका फरिश्ता स्थिति से प्यार नहीं, ब्रह्मा बाप नहीं मानता है कि मेरे

से प्यार है। कौन सी स्थिति से प्यार नहीं ? फरिश्ताई स्थिति। फरिश्ता स्थिति अर्थात् जिसका फर्श की दुनियाँ वालों से कोई रिश्ता न हो, संबंध न हो। वह है फरिश्ता और ऐसी स्टेज से जिसका प्यार नहीं, तो ब्रह्मा + बाप भी नहीं मानते कि मेरे से प्यार है। यानी मात-पिता से प्यार है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। प्यार का अर्थ ही है समान बनना। किस बात में समान? हर बात में समान, पुरूषार्थ में समान। तो ब्रह्माबाप फरिश्ता है ना? वे समझते हैं, हाँ फरिश्ता है। तो जब शरीर ही नहीं है तो फरिश्ता होने का क्या मतलब? शरीर भी हो और शरीर रहते इस फर्श की दुनियाँ वालों से कोई रिश्ता न हो। तो कमाल है। शरीर ही छूट गया तो कमाल कैसा! क्योंकि रिश्ते-नाते ये शरीर के साथ बनते हैं या बिना शरीर के भी बन सकते हैं? शरीर के साथ बनते हैं। तो ऐसी स्टेज बनानी है। ब्रह्माबाप भी ऐसी स्टेज में पार्ट बजा रहे हैं। ऐसे नहीं कि ब्रह्माबाप ने शरीर छोड़ दिया और ऊपर कोई सूक्ष्मवतन है, उसमें फरिश्ता बन करके रह रहे हैं। तो खुद को तो शरीर है ही नहीं। तो बच्चों को क्या डायरेक्शन दिया जाए, शिक्षा दी जाए कि तुम फरिश्ता बन जाओ। क्या बच्चे भी शरीर छोड़ दें? फरिश्ता बन आप सबको फरिश्ता बनाने के लिए फरिश्तों की दुनियाँ में रुके हुए हैं। कौन? ब्रह्मा और बाप, दोनों ही। कहाँ रूके हुए हैं ? ऊपर। ऊपर हैं ना? ऊपर हैं या ऊँची स्टेज में हैं ? ऊँची स्टेज में हैं। जैसे अमरनाथ को दिखाया पहाड़ पर वो तो

भक्तों ने दिखा दिया; लेकिन अमरनाथ का मतलब है ऊँची स्टेज। जहाँ लिंग भी बर्फ जैसा हो गया। नहीं तो लिंग कोई बर्फ का नहीं होता है। यह तो स्टेज दिखाई गई है। इस स्टेज को धारण करने की बात है। वो ऊँची स्टेज जिसमें यह देह और देह के सम्बन्धी याद ना आएँ। ज्ञान के बारे में मनन-चिन्तन-मंथन चलता रहे। नई दुनियाँ के बारे में , नई दुनियाँ की प्लैनिंग के बारे में, सेवा के बारे में मंथन चलता रहे। तो सिर्फ मुख से नहीं कहो कि हमको ब्रह्माबाप से बहुत प्यार है। बाबा से बहुत प्यार है। बाबा से प्यार इतना है जो क्या वर्णन करें। कहते भी हैं कि हमारा बाबा से इतना प्यार है कि हम वर्णन नहीं कर सकते। तो ब्रह्माबाप कहने से खुश नहीं होते। बनने से खुश होते हैं। कहने वाले तो भगत भी दुनिया में बहुत हैं। कितने प्यार के गीत गाते हैं। इतने प्यार के गीत गाते हैं जो अनेकों को हँसा भी देवें, तो रूला भी देवें। वह हैं कहने वाले भगत और आप हो बनने वाले। अगर सिर्फ कहते रहते हैं तो समझो अभी भी भक्ति का अंश रहा हुआ है। गरजते हैं; लेकिन बरसते नहीं। तो भक्ति के बादल हो गये। ज्ञानी तू आत्मा नहीं हैं। और जब ज्ञानी तू आत्मा ही नहीं हैं , भक्ति का अंश है तो शरीर छोड़ना पड़ेगा। नया शरीर धारण करके अगले जन्म में फिर से पुरूषार्थ करना पड़े अथवा ब्रह्मा-सरस्वती की तरह ये स्थूल शरीर हमेशा के लिए छोड़ना पड़े। सूक्ष्म शरीरधारी बन करके प्रवेश करके कार्य करना पड़े। तो

ज्ञानी तू आत्मा नहीं कहे जायेंगे, न ही योगी तू आत्मा कहेंगे; लेकिन भक्तयोगी आत्मा कहेंगे। तो बनने वाले हो या कहने वाले हो ? कहने में तो कहेंगे कि बनने वाले हैं।

तो क्या करेंगे अभी ? कोई नवीनता दिखायेंगे या जैसे इस वर्ष किया वही करेगें ? इस वर्ष क्या किया? सिर्फ तपस्या की। कर्म को छोड़ दिया। कर्मयोगी नहीं बनें। और बाबा क्या चाहते हैं ? कर्मयोगी बनें। कर्म भी साथ-साथ हो और याद भी साथ-साथ हो। तपस्या भी हो। ऐसा भी समय आयेगा, जो बापदादा उन्हों से ही मिलेंगे जो करने वाले हैं। जो बनने वाले हैं। सिर्फ कहने वाले नहीं हैं। सिर्फ कहने वालों से, बोल-बोल करने वालों से बापदादा मिलेंगे भी नहीं। बात ही नहीं करेंगे। ऐसा भी समय आयेगा। अब कब आयेगा ऐसा समय? सालों से तो कहते चले आये हैं कि बापदादा का ये पार्ट भी बन्द हो जायेगा जो गुल्जार दादी में चल रहा है। कितने वर्ष हो गये कहते-कहते कि ये पार्ट भी बन्द हो जावेगा। तो ऐसा समय अब कब आयेगा? किस रूप में आयेगा ?

''बी'' साइड (कैसेट)

08/04/92 की वाणी का तीसरे पेज का मध्य

किस रूप में मिलेंगे? अव्यक्त पार्ट तो बन्द हो जायेगा , ऐसा बोल दिया। फिर किस रूप में मिलेंगे? जरूर साकार तन में रहते हुए भी अव्यक्त स्टेज में रहने वाला ब्रह्माबाप बच्चों को

भी ऐसी ही स्टेज बनाने के लिए निमंत्रण दे रहे हैं कि ऐसी स्टेज बनाओ, जिसमें सिर्फ करने की बात हो, कहने की बात ही नहीं। तीन तरह के व्यक्ति होते हैं- एक होते हैं, बहुत बोलते हैं। बहुत कहते हैं। करते कुछ भी नहीं। दूसरे होते हैं, कहते भी हैं उतना करते भी हैं और तीसरे होते हैं, करते हैं; लेकिन कहते नहीं। तो करने वाले, दूसरे करने और कहने वाले और तीसरे सिर्फ कहने वाले। जैसे पेड़ भी तीन तरह के होते हैं- कोई पेड़ होते हैं, जिनमें फूल ही फूल होते हैं। पत्ते होते ही नहीं। कोई पेड़ होते हैं, जिनमें फूल भी होते हैं, तो पत्ते भी होते हैं और कोई वृक्ष होते हैं, पत्ते ही पत्ते। न फूल, न फल। तो कैसा बनना है? कौन सा वृक्ष अच्छा लगता है ? जिसमें फूल ही फूल हों। पत्तों का क्या काम? अगर सेकण्ड का लक्ष्य रखेंगे तो नीचे भी आ सकते हैं और फर्स्ट का लक्ष्य रखेंगे, फर्स्ट नहीं तो सेकन्ड तो आ ही सकते हैं। जैसे लक्ष्य वैसा लक्षण। अभी तो देखो, बापदादा सबको एलाऊ कर देते हैं कि कोई आये मिलने के लिए , बात-चीत करने के लिए; लेकिन अब कैसा समय आने वाला है ? सबको एलाऊ नहीं करेंगे। जिनकी कथनी और करनी एक है, उनको एलाऊ करेंगे। भावना वाले भी आ जाओ। ज्ञानी तू आत्मा भी आ जाओ। योगी तू आत्मा भी आ जाओ। अभी सबको एलाऊ कर देते हैं; लेकिन समय परिवर्तन होना ही है। इसलिए अपने ऊपर और दस गुणा अंडरलाइन करके परिवर्तन

हो करके दिखाओ। फिर बापदादा को उलाहना नहीं देना। ऐसे कैसे होगा कि मिलने के लिए ही एलाऊ नहीं करेंगे। हम तो दुनियाँ के बड़े-बड़े आदमियों को लाने के प्लान बना रहे हैं। बड़े-बड़े मठाधीश, पीठाधीशों, बडे-बडे. धर्मसत्ताधीशों , राष्ट्रपति और प्राइममिनिस्टरों को हम लाते हैं बापदादा से मिलाने के लिए। और वो एकदम तो इतने चेंज होने वाले तो हैं नहीं कि फटाक से कहने के साथ-साथ करने वाले बन जाएं। तो क्या ऐसे वीआईपीज़ की सर्विस करना बेकार हो जायेगी? क्योंकि बापदादा तो मिलेंगे ही नहीं। तो ऐसे उलाहना नहीं देना। ऐसे क्यों किया? कि परमात्मा बाप है तो सबका बाप है ना! फिर कोई से मिलता कोई से नहीं मिलता। ऐसा क्यों ? आप पुरूषार्थ में नहीं स्ट्रिक्ट होते हो तो फिर बाप को स्ट्रिक्ट होना ही पड़ेगा। अभी तो बाप के प्यार स्वरूप से चल रहे हो और पल रहे हो। अभी सद्गुरू का रूप धारण नहीं किया है। क्योंकि सद्गुरू का रूप होता है- स्ट्रिक्ट। जैसे भक्तिमार्ग में गायन है- 'गुरू का बुलावा काल का बुलावा।' जैसे किसी का काल आता है, मृत्यु आती है तो कोई रोक नहीं सकता। तो ऐसे ही बाप ने कहा, ये करो और फिर नहीं किया! तो मृत्यु निश्चित है। मृत्यु अर्थात् निश्चय उखड़ जायेगा बाप के पार्ट के ऊपर से, ऐसा पार्ट बजायेगा। तो अभी भी प्यार स्वरूप से चल रहे हो। पल रहे हो; लेकिन सद्गुरू का भी रूप है। धर्मराज का रूप नहीं कह रहे हैं।

लेकिन सद्गुरू ! सद्गुरू की आज्ञा सिरमाथे पर गाई हुई है। इसलिए अभी तो बापदादा मीठे बच्चे , प्यारे बच्चे कह कर चला रहे हैं। मतलब मीठे और प्यारे हैं नहीं ; लेकिन बापदादा भी किसी तरह चला रहे हैं।

अगर प्यार है, मिलन की प्यास है तो समान बनके मिलो। कौन सी समानता बताई? बाप समान। किस बात में समानता बताई? फरिश्ता। जैसे ब्रह्माबाप फरिश्ता बन करके चल रहे हैं। कोई कहे कि ब्रह्मा बाप को तो शरीर ही नहीं है। हमको तो शरीर है। तो ये अज्ञानता है। ऐसी बात नहीं है कि ब्रह्मा बाप जो खुद नहीं बना है , वो बच्चों को बनाने के लिए कह रहा है। ब्रह्मा बाप स्वयं भी इस समय शरीर होते हुए भी इस फर्श की दुनियाँ के रिश्तों से परे हैं। तो ब्रह्मा बाप खुद जिस स्टेज को धारण किये हुये है, वही स्टेज बच्चों को धारण करने के लिए कह रहा है। तो अगर प्यार है, मिलन की प्यास है तो समान बन करके मिलो। फरिश्ताई बाप से फरिश्ता बन करके मिलो। क्योंकि मिलना तो फिर भी कर्मेन्द्रियों के साथ है; लेकिन कर्मेन्द्रियों में देहभान आया तो बच्चे कर्मेन्द्रियों से देहभान वाले और बाप फरिश्ता। तो ये मिलन कहाँ तक चलेगा? अवस्था नीचे-ऊपर होती रहेगी। लौकिक दुनियाँ में भी मेल किया जाता है। एक खूब मोटा हो और एक बिल्कुल छोटा और पतला हो तो मेल होगा? कुछ मेल नहीं होगा और ही जिंदगी दूभर हो जायेगी।

ऐसे ही ब्रह्माबाप फरिश्ता बन करके कार्य कर रहे हैं और बच्चे बार-बार साकारी बनते हैं। देहभान में आते हैं। तो ये मिलन स्थायी नहीं हो सकता। इसलिए समान बन करके मिलो। महान अंतर से नहीं मिलो। थोड़ा बहुत अन्तर हो तो कोई बात नहीं। ब्रह्माबाप कवर कर लें। समान बन के मिलने में बहुत मज़ा है। उसका अनुभव ले के देखो। वो मज़ा और ही प्रकार का है। देहभान का भी मज़ा होता है। वो तो होता है क्षणभंगुर और जिस मज़े को लेने की बात बापदादा कर रहे हैं वो कोई और ही मज़ा है।

अच्छा हुआ आ गये। कम से कम आ तो गये। अभी तो वो समय नहीं आया है कि जो एलाऊ ही न करें। बाप से मिल लिया, दृष्टि ले लिया। फिर वहाँ गये। फिर कोई कमज़ोरी आ गई। शक्ति मिली और काम में लाई। एक/दो बारी विजयी बने फिर कमज़ोर बन गये- यह मिलना अपने प्रकार का मिलना है कि बार-बार मिलना और बार-बार कमज़ोर हो जाना। लेकिन यथार्थ प्यार, यथार्थ मिलन इससे बहुत ऊँचा है। यथार्थ मिलन कैसा? यथा अर्थ जिसे कहते हैं- अव्यक्त मिलन। बापदादा अव्यक्त है। तो अव्यक्त बापदादा से अव्यक्त हो करके मिलन मनाओ। देहभान में आ करके मिलन ना मनाओ। तो यथार्थ मिलन क्या हुआ? नाम ही है अव्यक्त मिलन। जिसमें व्यक्त स्टेज न हो। देहभान न हो। बहुत-बहुत प्यारा है, तो उस बात का

अनुभव करो कि दुनियाँ के मुकाबले या दुनियाँवालों के मुकाबले बाप कैसे बहुत-बहुत प्यारा है। समझा!

सत्गुरू के आगे आज्ञा कोई ने नहीं मानी- ऐसा तो कोई नहीं है ना! कि सद्गुरू के आगे भी आये और आज्ञा मानने से इन्कार कर दे। सद्गुरू है ना! बाप के आगे तो बच्चों के नाज़-नखरे चलते हैं; क्योंकि माता-पिता हैं। नाज़-नखरे मतलब हम नहीं करेंगे, ऐसा हमसे नहीं होगा। तो ये हुये नाज़-नखरे। हमको बीमारी हो जायेगी। तो बाप और माँ के आगे तो नाज़-नखरे चलते हैं। लाड़-कोड़ चलता है। इसलिए इस वर्ष में अगर आपको बाप से प्यार है , सच्चा प्यार है , मिक्स नहीं है कि थोड़ा बाप से भी प्यार, थोड़ा और किसी से भी प्यार कर लेवें। मिक्स प्यार नहीं है। तो बनो। फरिश्ता समान बन करके दिखाओ। कब? इस वर्ष। अभी तो इतने सब आये हुए हो मिलने लिए। बहुत अच्छा है; लेकिन और अच्छे ते अच्छा करना। प्यार है तब पहुँचे हो; लेकिन प्यार का प्यार करना और प्यार निभाना उसमें अंतर हो जाता है। प्यार का प्यार करना, कोई हमसे प्यार कर रहा है हम भी उससे प्यार कर रहे हैं। तो कोई बड़ी बात नहीं ; लेकिन चाहे प्यार करे चाहे ठुकराये। क्योंकि प्यार की भी परीक्षा तो लेगा ना! बाप कोई ठुकराता नहीं है। बच्चे समझ लेते हैं कि बाप हमें ठुकरा रहा है। ठुकराना माना धक्का दे दे, भागो यहाँ से! बाप किसी को ठुकराता नहीं है। सिर्फ तौल के देखता है।

क्योंकि बच्चों को बताना है। नहीं तो बच्चे कहेंगे इन्हों को माला का इतना ऊँचा मणका बना दिया। हममें क्या खामी थी, जो हमको नीचे डाल दिया। तो ऐसा न कहें। तो ये क्लीयर करने के लिए कि किनका प्यार ज्यादा है? ज्यादा प्यार है मतलब ज्यादा योग है, ज्यादा लगन है। तो प्यार का प्यार करना ये कोई बड़ी बात नहीं; लेकिन प्यार को निभाना, निभाने वाली परिस्थिति जब आये, तो वो तो तब ही आयेगी जब कोई ऐसी परीक्षा की बात आये। '' हम तुम्हें चाहें तुम नहीं चाहो '' कहते हैं ऐसा कभी नहीं हो सकता। यानी आत्माएँ परमात्मा बाप से प्यार करें और परमात्मा बाप उनसे प्यार न करे, ऐसा हो सकता है क्या? यानी आत्माओं का प्यार ज्यादा ऊँचा हो गया और परमात्मा का प्यार नीचा हो गया! ऐसा कभी नहीं हो सकता। प्यार में बच्चे नम्बरवार हैं और बाप का प्यार तो सागर है। देखने में भल वो थोड़े समय के लिए आता हो कि बाप हमसे प्यार नहीं करता। इसलिए हम ये जानते हैं। दूर रहके सेवा करेंगे। ऐसी कोई बात नहीं है। बाप का प्यार तो संसार में इतना गाया हुआ है कि आज तक भी हर धर्म की आत्मा उस बाप को याद कर रही है। दुनियाँ में जब सब सहारे टूट जावेंगे, सारे सहारे बिखर जावेंगे तब विनाश के पीरियड में, बाप ही सच्चा सहयोगी, सच्चा मीत हर आत्मा का बनेगा। हर आत्मा ये अनुभव करेगी कि हमने बाप को याद किया ऐसे समय पर तो बाप ने हमको सहयोग दिया। तो

प्यार का प्यार करना कोई बड़ी बात नहीं। प्यार को निभाना यही ऊँची बात है। प्यार को निभाना और प्यार करने वाले से प्यार करना इन दोनों बातों में अंतर है। करने वाले सभी हो। अगर प्यार नहीं होता तो इतना क्यों आते? आते हो बार-बार , पतंगे हैं , भांति-भांति के पतंगे होते हैं। कोई पतंगे ऐसे भी होते हैं कि एक बार आते हैं तो फिर दुबारा आते ही नहीं। तो आते हो इसका मतलब प्यार तो है। मतलब चक्कर काटने वाले पतंगे हो। फिदा होने वाले, स्वाहा हो जाने वाले पतंगे नहीं हो कि आये और झाटकू। झट से फिदा हो गये। तो प्यार अगर नहीं होता तो इतना क्यों आते? ना-ना करते तो भी आ जाते हो। क्या ! ना-ना करते, नहीं जायेंगे क्योंकि अनिश्चय पैदा होता है तो नहीं जायेंगे। अनिश्चय तो पैदा होता है ना कि अटल निश्चय बना रहता है? ध्रुव तारे बन गये ? तो जब अनिश्चय पैदा होता है तो ना-ना करते तो भी आ जाते हो ना ! '' ना-ना करते प्यार तुम्हीं से कर बैठे। '' गीत बना देते हैं ना। इससे नहीं मिलेंगे। ये अच्छा नहीं है। लेकिन फिर भी आते हैं। चाहते नहीं हैं; लेकिन फिर भी आ जाते हैं। प्यार तो है। ऐसा नहीं है कि प्यार नहीं है; लेकिन प्यार करना और प्यार को अन्त तक निभाना; क्योंकि निभाने में नम्बरवार हो जाते हैं। कोई थोड़े समय तक निभा पाते हैं और कोई लम्बे समय तक निभाते हैं। कोई फिर ऐसे भी निकलते हैं जो अन्त तक निभाते हैं। तो प्यार करने के आधार पर नम्बर

मिलेंगे या प्यार निभाने के आधार पर नम्बर बनेंगे? जिसने जितना निभाया उतना माला का मणका ऊँची स्टेज में जायेगा। तो प्यार करना और निभाना इसमें अन्तर हो जाता है। प्यार करने वाले कितने होते हैं ? अनेक होते हैं ना! और निभाने वाले कितने होते हैं? तो आप कौन हो? निभाने वाले हो या प्यार करने वाले हो? कि बार-बार मुख से कहते हो हम परमात्मा को बहुत प्यार करते हैं। हमारा बहुत प्यार है। आप कौन हो ? निभाने वाले। फिर ये कहना कि होना तो चाहिए निभाने वाले- ये बात खत्म हो गई। निभाने वाले ''चाहिए'', ''चाहिए'' ऐसे नहीं कहेंगे ; लेकिन निभाने वाला होना तो चाहिए। ऐसे नहीं कहेंगे। क्या करेंगे? प्रैक्टिकल है। सिर्फ मुख से नहीं है। तुम प्रैक्टिकल करके दिखाने वाले हो। मुख से कहने वाले नहीं हो।

सुनाया ना कि तपस्या के चार्ट में भी अपने को मार्क्स, अपने को सर्टिफिकेट देने वाले बहुत हैं कि हमने बहुत तपस्या की। चौदह घण्टे की भट्ठी की। लेकिन सर्व की सन्तुष्टता का सर्टिफिकेट- ये कोई-कोई को प्राप्त है। तपस्या ऐसी हो जिस तपस्या से सब सन्तुष्ट हों। चार्ट रखने वाले भी बहुत निकले। जिन्होंने चार्ट रखा। अपने को सर्टिफिकेट अच्छे ते अच्छा देने वाले भी बहुत निकले। चार्ट रखा भी और अपने से अपने आप सर्टिफिकेट ले लिया; बहुत नहीं हैं; लेकिन कुछ हैं। थोड़ा , बहुत। ज्यादा तुम समझ लो। सेकिण्ड नम्बर लेने वाले बहुत हैं;

(चौथा पेज) लेकिन सबके मुख से यह निकले कि हाँ ये प्यार को निभाने में नम्बरवन है। सबकी दिल से ये दुआओं का सर्टिफिकेट मिले। इसको कहेंगे तपस्या में नम्बरवन लवलीन, इसको थकान होती ही नहीं । बापदादा ने पहले भी कहा था कि कई बच्चे कहते हैं कि हम तो ठीक हैं। कोई-कोई आत्माओं का कोई कड़ा हिसाब है हमारे से , जो कितना भी हम उनको सन्तुष्ट करते हैं वह सन्तुष्ट होते ही नहीं। तो जो सच्चे तपस्वी होंगे वह ऐसे नहीं कहेंगे। तो बापदादा ने पहले भी कहा था कि अगर ऐसा कोई कड़ा हिसाब-किताब है भी तो भी कम से कम 95% सर्टिफिकेट मिलना चाहिए। 5% क्यों छोड़ दिया? क्योंकि 5% ऐसी आत्माएँ हैं , जो हमारी परीक्षा लेने के निमित्त हैं। इसलिए उनको छोड़ देना है। सन्तुष्टता का सर्टिफिकेट वे नहीं देंगी। क्योंकि वे तो हैं ही परीक्षा लेने वाली। वे कैसे कह देंगी- हम तुमसे सन्तुष्ट हैं। 5% का कड़ा हिसाब-किताब है। उसको भी छोड़ो , वो भी माफ है। क्यों माफ है ? क्योंकि वे तो हैं ही परीक्षा लेने वाले ; लेकिन 95% दिल से दुआयें दें कि हम इनसे सन्तुष्ट हैं। नहीं तो कई ऐसे कहते हैं कि सबसे कौन सन्तुष्ट है? ऐसा तो हो ही नहीं सकता कि सब किसी से सन्तुष्ट हो जाएं। ऐसा तो हमने कोई देखा ही नहीं। ऐसा तो एक भी दिखाई नहीं देता है जिससे सब सन्तुष्ट हों। बड़ों के लिए भी सोचते हैं, इनसे भी कोई नाराज़ है तो हमसे कोई नाराज़ हो गया तो क्या बड़ी बात

है? लेकिन नहीं। जो निमित्त बड़े बने हुए हैं, मान लो, धर्मराज का पार्ट बज़ाने वाला कोई निमित्त बना हुआ है , तो उससे सब सन्तुष्ट हो जायेंगे क्या ? वह तो सज़ा देगा। वे नहीं समझ पायेंगे, जब तक उनको पूरा साक्षात्कार न हो। तो उन आत्माओं को छोड़ दिया जाता है। जो निमित्त हैं परीक्षा लेने के। उन बड़ों को छोड़ो। वह तो बड़ों को जज बनना पड़ता है। बड़ों की बात दूसरी है। दो में से एक की बात हाँ करेंगे तो वे कहेंगे- बहुत अच्छे, जिसको ना करेंगे वो क्या कहेंगे ? कहेंगे, ये भी अच्छा नहीं है। तो जज एक का हाँ करेगा या दोनों का हाँ करेगा? क्या करेगा? तो वह बातें अलग बात है। लेकिन दिल की तपस्या, दिल का प्यार, निमित्त भाव, शुभ भाव- वो सर्टिफिकेट सामने देखो। ये नहीं कॉपी करो कि बड़ों से भी सन्तुष्ट नहीं हैं तो हम तो पास हो ही जायेंगे। क्या ? कि सब तो बड़ों से भी सन्तुष्ट नहीं होते तो हम तो छोटे हैं। तो हम तो ज़रूर पास हो जायेंगे। पहले तो बड़ों से सन्तुष्ट होने चाहिए। जो बड़े पुरूषार्थी माने जाते हैं। तो ऐसे नहीं सोचो। क्यों? क्यों नहीं सोचें ? बड़ों के लिए ऐसा क्यों नहीं सोचें ? क्योंकि कोई-कोई बड़े ऐसे हैं जो उस परीक्षा की स्टेज पर निश्चित किये गये हैं। वो कोई स्टेज पकड़ चुके हैं। इसलिए उनको परीक्षक बनाया गया है। 95% अगर सन्तुष्ट हैं तो तुमको नम्बर मिल ही जायेगा। 5% परीक्षा लेने वाले बड़े निमित्तों को छोड़ दो।

अच्छा , चारों ओर के आदि पिता के आदि रचना। आदि रचना अर्थात् पहली-पहली रचना। डायरैक्ट रचना। कोई मीडिया जिनके बीच में नहीं है। डायरैक्ट बाप की रचना है। ब्रह्मा तो मीडिया होगा! कि वो भी मीडिया नहीं। ब्रह्मा भी कम्प्लैंट करता हमारी अनुमति के बगैर इनको क्यों बच्चा बना लिया? डायरैक्ट रचना। ऐसी श्रेष्ठ आत्माएँ सर्व जीवनमुक्त का वर्सा अनेक जन्म प्राप्त करने वाली आत्माएँ, सर्व ब्राह्मण सो फरिश्ता, फरिश्ता सो देवता बनने वाली अधिकारी आत्माएँ , सदा प्लेन बुद्धि बन सेवा के प्लान में सफलता प्राप्त करने वाली आत्माएँ, बाप से सच्चा स्नेह, सच्चा प्यार निभाने वाली सर्व समीप आत्माओं को, दूर वाली आत्माओं को नहीं समीप आत्माओं को, बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात :- सबसे अच्छी सेवा की ना! ना क्यों लगा दिया? सभी ने मिलकर संगठन को सज़ाने की सेवा अच्छी की है। कोई सेवा की या न की; लेकिन संगठन को सजा दिया। सँवार दिया। थोप-थाप कर दी। ये सेवा अच्छी की है। संगठन को सजाने की सेवा कितनी प्यारी है! जैसे जवाहरी एक-एक रतन को बेदाग़ बनाता है। जिसमें कोई कमी न हो। रतन को अच्छा, बढ़िया करके बना देता है।.....

ओमशान्ति